eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 10, October 2025

दलित कहानी दिशा एवं दशा

डॉ0 सुमति सिंह[1]
[1]प्रतापगढ, उ0प्र0

Received: 25 Oct 2025 Accepted & Reviewed: 28 Oct 2025, Published: 31 Oct 2025

Abstract

दलित कहानी साहित्य भारतीय समाज की सामाजिक संरचना, विशेषतः जाति–व्यवस्था की जटिलताओं और उससे उत्पन्न विषमताओं का सशक्त अभिव्यक्ति माध्यम है। दलित कथाकारों ने अपने अनुभवों, संघर्षों और सामाजिक यथार्थ को कथा–साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत कर मुख्यधारा साहित्य में एक नई दिशा का उद्घाटन किया है। दलित कहानी की दिशा सामाजिक न्याय, समानता, आत्मसम्मान और मानवीय अधिकारों की स्थापना की ओर उन्मुख है। यह साहित्य न केवल शोषण और उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज उठाता है, बल्कि दलित चेतना, अस्मिता और प्रतिरोध की भावना को भी सुदृढ़ करता है।

दलित कहानी की दशा पर विचार करने पर स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक दौर में यह साहित्य उपेक्षित रहा, किंतु समय के साथ इसे व्यापक स्वीकृति मिली है। आज दलित कथाएँ अकादमिक विमर्श का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी हैं और सामाजिक परिवर्तन के उपकरण के रूप में कार्य कर रही हैं। हालांकि, अभी भी प्रकाशन, प्रतिनिधित्व और सामाजिक स्वीकार्यता के स्तर पर चुनौतियाँ बनी हुई हैं। अतः दलित कहानी की दिशा और दशा का सम्यक अध्ययन सामाजिक समावेशन और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य शब्द– दलित साहित्य, दलित कहानी, सामाजिक न्याय, अस्मिता, जाति–व्यवस्था, शोषण, प्रतिरोध, सामाजिक परिवर्तन

Introduction

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य किसी जाति, धर्म या वर्ग का साहित्य नहीं है, अपित यह सम्पूर्ण मानवता की चर्चा करने वाला साहित्य है। साहित्ये ब्रह्मानन्द सहोदर है। साहित्य वह सूरम्य रचना है, जो हृदय से निकलकर हृदय को ही प्रभावित करती है। साहित्य व सामाजिक जीवन का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। समाज जीवन सामाजिक चेतना, सामाजिक परिवेश के साथ उसकें। परिवर्तित चित्र को भी अंकित करने का कार्य साहित्य में हो रहा है। 'दलित' का शाब्दिक अर्थ है– कुचला हुआ। दलित अर्थ व्यापक रूप में पीड़ित के अर्थ में प्रयुक्त होता रहा है। आज के सन्दर्भ में दलित का अर्थ होगा वह जाति या समुदाय जिसका अन्याय पूर्ण समाज व्यवस्था के कारण सवर्णो या उच्च जातियों द्वारा दमन हुआ है। जिनको दुषित किया गया है, रौंदा गया है। इस प्रकार दलित वर्ग में वे सभी जातियाँ सम्मिलित हैं, जो जातिगत सोपान क्रम मे निम्न स्तर पर हैं और जिनको शताब्दियों से दबाकर रखा गया है। देश काल के अनुसार, दलित जातियों को विभिन्न नामों से सम्बोधित किया गया है। जिनके लिए शूद अछूत ,अन्त्यास, हरिजन, अनुसूचित जातियो आदि शब्दों का प्रयोग होता रहा है। दलित साहित्य सातवें दशक में हिन्दी साहित्य की एक विद्या के रूप में अस्तित्व में आया। दलित साहित्य को अनुमंज आज भारत ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भी सुनी जा सकती है। दलित साहित्य के प्रारम्भिक दौर में अधिकर कविताएँ ही लिखी गयी। सातवें दशक में अनेक दलित रचनाकारों ने कहानी विधा को अपनाया। उस समय इन को

हिन्दी सम्पादकों द्वारा इतना प्रतिसाद, नहीं रहा। फिर भी इन दलित साहित्यका ने अपने हौंसले को कम नहीं होने दिया । हिन्दी दलित कहानियों का समकालीन परिदृश्य आठवे दशक में तेजी से उभरता दिखाई देता है तथा नये रचनाकार उभरकर इस साहित्य को नई दिशा दिखाने का प्रयास करते रहे। हिन्दी कहानियों में अनेक उतार–चढ़ाव तथा कथित आन्दोलनों से अलग दलित कहानी बदलते , हुए सामाजिक परिदृश्य के यथार्थ चित्रण की विशिष्ट धारा के रूप में सामने उभरकर आयी

हिन्दी दलित साहित्य में कहानियों का लेखन सन् 1980 के आस–पास प्रारम्भ हुआ। मोन दास, नैमीशराय, ओम प्रकाश वाल्मीकि, जय– प्रकाश कर्दम, सूरजपाल चौहान, प्रेम कपाड़िया कुसुमी, नियोगी आदि का कहानीकारों ने अपने, दौर में दलितों के वेदना और समस्याओं कहानी के माध्यम से समाज के समक्ष उठाने का प्रयास किया। कहानीकारों का मूल उद्देश्य दलितों को अन्याय, अत्याचारों से मुक्त कराना तथा न्याय दिलाना ही मुख्य उद्देश्य रहा है। दलित कहानी कार रमेश जालोनिया, का प्रसिद्ध कहानी 'जीने का अधिकार' में गाँव का ठाकुर चतर सिंह व पंडित चित्ररंजन दोनों धंसू के भाई कटोर को इसलिए जंगल में मारकर फेंक देते हैं क्योंकि कटोरा खाना खाने के बादू ठाकुर के यहाँ की बेगारी का काम करने को कहता है। इसका प्रतिकार करते हुए धंसू अपने भाई के हत्यारों को कुल्हाड़ी से मार देता है। अपनी बिरादरी के लोगों कसे कुछ कहने के लिए दरोगा को रोकता है। और कहता है "सुनो, जरा ध्यान से सुनो, तुम नीची जाति के कहे जाने वाले लोग गांव में इतने अधिक हो और ऊंची जाति का ढोंग रचने वाले मुट्ठी भर फर्क है, तो सिर्फ इतना कि हम सब डरपोक हो। असंगठित हो अशिक्षित हो, इसीलिए अपने अन्दर से की त से बने बुराइयों को निकालो। तुम भी इन्हीं की तरह जीने का हक है। अपने आपको पहचानो अपनी ताकत को जानो। मैने अपने भाई की हत्या का बदला ले लिया है। अब मुझे फांसी होने का कोई गुम नहीं।" अन्याय के प्रति इस प्रकार की विद्रोही भावना दलितों में दिखाई देती है

दलित कहानियों के पाक आदर्शवादी जीवन जीना चाहते हैं, कि, कोई उनपर जुल्म या अन्याय करता, तो उसका प्रतिकार करना, भी उनकी यथार्थवादी जीवन का स्वरूप है। और यही दलित साहित्य का यधार्थ थी। आजादी प्राप्ति के पश्चात दलितों के मन में यह उम्मीद थी, कि अब रूढ़िवादी परम्परा का अंत होगा, छुआछूत से हम मुक्त होंगे। संविधान के अनुसार शिक्षा तथा नौकरियों में हमें आरक्षण मिलेगा। कुछ हद तक दलितों की स्थिति में सुधार हुआ है। दलित शिक्षित होने लगे, नौकरियाँ मिलने लगीं, किन्तु समानता नहीं मिल। भेदभाव की भावना आज भी हमें दिखायी देती है। इसलिए हो दलित साहित्य का सृजन अन्य साहित्य की तुलना में ज्यादा जोर पकड़ा हुआ है। सूरज पाल चौहान की 'साजिश' कहानी का नत्थू कठिनाई, से, बी० ए० की पुरीक्षा पास करके ट्रॉन्सपोर्ट के धंधे के लिए बैंक से कर्जा लेना चाहते है, किन्तु बैंक मैनेजर रामसहाय शर्मा नत्थू की दशा भूलकर उसे सूअर पालने के लिए कर्ज देना इसलिए पसंद करता है, क्योंकि नत्थू एक अद्भुत वर्ग का युवक है। मैनेजर शर्मा अपने हेड कलर्क सतीश भारद्वाज से कहता है, "देख सतीश अगर ये अद्भुत अपना खानदानी धन्धा बंद करने लगे तो आने वाली पीढ़ियाँ हमारे घरों की गन्दगी कैसे साफ करेगी। उस स्थिति में घर गन्दगी क्या खुद साफ करोगे?"

प्राचीन काल से ही महिलाओं की उपेक्षा हुई है। आज के युग में महिलाएँ असुरक्षित जान पड़ती हैं। लगभग प्रतिदिन हमें समाचार पदों में पढ़ने को मिलता है, कि महिलाओं, पर कैसे अत्याचार हो रहे हैं। हमारे संतों ने भी महिला को दोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी ये सब ताड़न के अधिकारी कहकर उपैक्षा की है। "अपना गांव' कहानी में मोहनदास नैमिशराय ने ठाकुर के खेतो में कबूतरी काम करने से इन्कार कर

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 10, October 2025

देती है, तो के साथ उसे निर्वस्त्र घुमाता दो हाकुर का बेटा अपने साथियों के साथ उसे निर्वस्त्र घुमाता है। पत्रकार को हेरिया बताता है, "म्हारी जात के औरतो को पहले से ही नंगा किया जाता रहा है। उनकी बेइज्जती की जाती रही है। गाँव का खाज बन गया है ये।"

उच्चशिक्षा हासिल करने के लिए भी दलितों को यातनाएँ दी जाती हैं। 'सुरंग' कहानी में दयानन्द बटोही स्वयं एम० एव द्वितीय क्लास में पास है। उन्हें आगे रिसर्च करना है किन्तु दुर्णवादी व्यवस्थाद उसे रिसर्च करने से टोकती है। कार्यकर्ता नेता से कहता है, "यह हरिजन है, इन्हें हिन्दी में रिसर्च करने नहीं दिया जा रहा है, हम सभ्य कहलाने वालों के परिवार के धर्ड क्लास, लड़के–लड़कियों को रिसर्च करने दिया जा रहा है, यूनियन के अध्यक्ष रघुनाथ की बहन एम ए में थर्ड कलास लायी है, उसे हिन्दी में रिसर्च करने दिया गया है, "जबकि हरिजन सेकण्ड क्लास के है, तथा हिन्दी प्राय सभी पत्र–पत्रिकाओं में इनकी कहानियाँ, कविताएं एवं साहित्य निबन्ध लोग चाव से पढते हैं।"

प्रेम कपाड़िया ने अपनी कहानी हरिजन में वासना को मिदाने के लिए किस तरह मंदिर में देवदासियों को पुजारी अपनी वासना पूर्ति के लिए रखते है इसका चितन किया है। देवदासी पार्वती अपने बच्चे को पटाना चाहती है, किन्तु मंदिर का पुजारी कहता है, "अरे परबतिया, कहीं राख में, फूल खिलते हैं भला? वह हरिजन है——........हरिजन कैसे पढ़ सकता है? हमारे वेदों में हरिजनों को वेद की पुराण सुनने की भी मानव है...... पढ़ने की बात तो दूर रही। खैर छोड़! अलमारी में सोम रस की शीशी है उसे निकाल ले, और गिलास, में डाल दे ....तब तक मैं कपड़े उतारता हूँ।"

अधिकतर देखा जाता है कि गाँव के ठाकुर जमींदारों के लड़के दलित लड़कियों की छड़ा– छोड़ी करने में माहिर होते हैं। बेचारी बेबस लड़किया, अपनी विवशता को बदनामी से छुपाती हैं। कानून के रक्षक ही आज कानून के यक्षक बन गए है। ओम प्रकाश शल्मीकि की कहानी यह अंत नहीं' एक प्रसंग देखिए– किसन की बहन बीरमा के साथ गाँव के मुखिया तेजभान का लड़का सचिन्दर छेड़खानी करता है। किसन अपने मित्रों से विचार– विमर्श कर पुलिस की मदद लेना चाहता है, किन्तु पुलिस इंस्पेक्टर कहता है,छेड़ा–छोड़ी हुई है.......बलात्कार तो नहीं हुआ.. तुम लोग बात का बतंगड़ बना रहे हो। गाँव में राजनीति फैलाकर शान्ति भंग करना चाहते हो। मै अपने इलाके में गुंडागर्दी नहीं होने दूंगा......चालुते बनो, आगे कहता है "फूल खिलेगा तो भौंरे मंडरायेंगे ही।"

दलित कहानियों का जब हम विश्लेषण करते हैं, तो पाते हैं, कि दलित कहानियाँ मुख्य रूप से तीन प्रकार की श्रेणियों में आती हैं– आदर्शवादी यथार्थपरक और चेतनामूलक। इन्हीं तीन श्रेणियों के निकट कहानियों का चित्रल हुआ। कुछ कहानियाँ आदर्श प्रस्तुत करती हैं कुछ जीवन का सच्चा और सही चितन प्रस्तुत करती है तथा वही कुछ कहानियाँ समाज को जागरूक करती हैं तथा सामाजिक विसंगतियों को दूर कर सुहद सुरम्य एवं संगठित समाज की परिकल्पना करती है।

यह कहना मुश्किल प्रतीत होता है कि वह पहली कहानी कौन–सी लिखी गयी जो दलित चेतना लेकर थी। परन्तु "सतीश, बादा रचित हिन्दी की पहली कहानी" वचनबद्ध है जो अप्रैल 1975 मे, 'मुक्ति' स्मारिका में प्रकाशित हुई। बाद में नैमिशराय की कहानी सबसे बड़ा सुख 1978 में प्रकाशित हुई, 'कथालोक' पत्रिका मे तथा ओम प्रकाश वाल्मीकि की कहानी अंधेरी बस्ती 'सन् 1988 में 'निर्णायक भीम पत्रिका' में प्रकाशित हुई।

दलित दृष्टिकोण से देखा जाये तो पहले प्रेमचन्द्र और समकालीन कलाकारों तथा बाद में नई कहानी के दौर में भी दलित पात्रों को लेकर सदैव कहानियाँ लिखी जाती रही हैं। परन्तु अस्सी के दशक के बाद दलित आन्दोलन विशेष रूप से मुखर हुआ जो साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखायी देता हैं। उपन्यासों की तरह कहानियों का आरम्भ भी मुंशी प्रेमचन्द से होती है। प्रेमचंद सामाजिक सरोकार के लेखक हैं। इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से दलितों के जीवन का जो चित्रण किया है, उससे उन्होंने समाज की संवेदनाओं को जाग्रत करने का प्रयास किया, है तथा यह प्रयास किया है कि उनके मन में दलितों के प्रति दया, करुणा, प्रेम व सम्मान का भाव जागृत हो। अत्याचार, अनाचार और तिरस्कार मंत्र 'ठाकुर का कुआ' 'दूध का दाम' 'पूस की रात' तथा 'कफन' आदि कहानियों के माध्यम से दलित चेतना को पुकारा है, झकझोरा है।

प्रेमचन्द जी के बाद कथाकारों में रांगेय राघव, फणीश्वर नाथ रेणु ,पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ,शिव प्रसाद सिंह, मन्नू भंडारी, जगदीश चन्द्र, नागार्जुन, रामदरश मिश्र, शैलेन्द्र सागर, मधुकर सिंह, मिथिलेश्वर मैत्रेई पुण्ण, उदय प्रकाश इत्यादि ने अपनी कहानियों के माध्यम से दलित–शोषित वर्गों की वस्तुस्थिति का समझने तथा उनके प्रति अन्य सामाजिक वर्गों की भावना एवं व्यवहार को समझने का भरसक प्रयास किया है, एक चेतन जागृत की है। दलित उत्पीडन एवं संवेदना के जितने भी पक्ष हो सकते हैं। इन कहानियों में सभी का चित्रण मिलता है। इन कहानियों में दलित जीवन की दुर्दशा पीड़ा एवं व्यथा को पूरी तरह उकेरा गया है। जो दलित जीवन का भयावह यथार्थ है। सदियों से शोषण का शिकार, रहे दलित वर्ग के शोषण का कोई एक रूप नहीं रहा।

अब्दुल बिस्मिल्लाह अपनी कहानी 'खाल, खींचने वाले' मैं मेरे पशुओं को ढोकर गाँव–बस्तियों से बाहर ले जाकर उनका खाल निकालने वाले दलितों के शोषण और दर्द को चित्रित करते हैं। दलितों ने यदि कभी अपने स्वाभिमान के लिए आवाज उठाई है तो उसे मारना–पीटना और प्रताड़ित करना सामान्य सी बात है।

रमणिका गुप्ता और उमेश कुमार सिंह ने अपनी कहानी 'बहू जुठाई' और पहली रात का अंत में नवविवाहितो दलित स्त्री की पहली रात गाँव के ठाकुर या जमींदार के साथ बिताने का प्रथा के प्रतिकार को चित्रित किया है, जो इस समाज के लिए अभिशाप है, कुरीति बुराई है।

भगीरथ मेघवाल की कहानी 'सूरज की 'चिंता' अन्तर्जातीय विवाह पर आधारित कटानी है। जिसमें, एक सवर्ण लड़की को दलित, युवक से प्रेम हो जाता है, वह विवाह कर लेती है। परन्तु बाद में गाँव वापस आने पर, उस, दलित युवक को ठाकुर जिन्दा जला देता है।ऐसी घटनाएं आज भी समाज में कहीं–कहीं देखने सुनने को मिलती है।

डॉ. दयानन्द बटोही ने 'सुरंग' में एक उच्चशिक्षित दलित, युवक की बेकारी की समन्या का चित्रण किया है। डॉ० कुसुम वियोगी की कहानी 'और वह पढ़ गयी' में एक मैला साफ करने वाली लड़की की कहानी है, जो माँ की तरह जीवन व्यदीत करना नहीं चाहती। अपने हाँथ में झाड़ू–टोकरी नहीं पकड़ना चाहती है। कुथा नायक उसे पढ़ने के लिए प्रेरित करता है, जिससे वह लड़की पढ़ने के बाद आगे चलकर सरकारी नौकर पाती है। इस कहानी में शिक्षा के महत्व पर बल दिया गया है तथा शिक्षा के माध्यम झे सामाजिक परिवर्तन की अपेक्षा की गई है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 10, October 2025

परम्परा विरोध पर आधारित कहानियों में ओम प्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'सलाम ' तथा सत्य प्रकाश की कहानी 'बिरादरी भोज' सूरज पाल चौहान की 'परिवर्तन की बात भारत नैमिशराय की 'अपना गाँव, रत्न कुमार सामरिया की शर्त इत्यादि कहानियाँ उल्लेखनीय हैं, जो दलितो में व्याप्त एक घातक परम्परा विरोध का चित्रण है, तथा यह दलितों में सम्मान एवं स्वाभिमानसे जीने की विकसित हो रही भावना की सार्थक अभिव्यक्ति है।

विपिन बिहारी की कहानी 'अपनी सीमाएँ ' भी गाँव में व्याप्त जाति–व्यवस्था के कड़वा सच को समाज के समक्ष रखती है। प्रेम कपाड़िया की कहानी 'हरिजन' देश वासियों के जीवन पर केन्द्रित एक यथार्थ परक कहानी है जिसमें धर्म के नाम, पर, देवदासी प्रथा के नाम पुर दलित स्त्रियों के शोषण को दिखाया गया है। प्रेम कपाड़िया की यह कहानी हिन्दू धर्म के उस घृणित चेहरे को समाज के समकक्ष रखती है, जो धर्म के नाम पर दलित महिवासों को वेश्या बनाता है।

अनेक कहानियों में दलितों के आक्रोश एवं बदले की भावना को भी दर्शाया गया है। कर्मशील भारती की कहानी 'स्वाभिमानी' में भी नायिका के प्रतिशोध की भावना को दर्शाया गया है। इस कहानी की नायिका की छोटी बहुन का बलात्कार कुछ राजपूत युवकों द्वारा होता है 'जिसका बदला व नायिका उन युवकों की हत्या करके लेती है। अनेक दलित लेखकों ने कहानियों के माध्यम से दलितों की दो जाति के बीच के अंतर्विरोध का उकेरा है। इस अन्तर्विरोध की सबसे महत्वपूर्ण कहानी ओम प्रकाश बाल्मीकि की 'शवदृयात्रा' है जिसमें सभी और चमार,, जाति के अन्तविरोध का चित्रण किया गया है।

इन कहानियों के अतिरिक्त ओम प्रकाश वाल्मीकि की 'बहुरूपिये', 'सपना', सूरज पाल चौहान की 'हैरी, कब आयेगा' विपिन बिहारी का 'अपना मकान' 'पनवारस', और 'आधे पर अंत' कुसुम वियोगी की 'चार इंच की कलम' स्वरूप चन्द्र के 'दलित अन्तर्द्वन्द' डॉ० शत्रुहन कुमार का हिस्से की रोटी तथा संतराम आर्य का 'उधार की जिन्दगी' कहानियाँ दलित विमर्श की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है जो आदर्शवादी, एवं चेतना मूलक है।

स्वतन्त्र कहानियों के अतिरिक्त अनेक कहानी संग्रहों का सम्पादन भी हुआ। इस प्रकार की सम्पादित कहानियों मे डॉ. कुसुम वियोगी द्वारा सम्पादित "सन्मकालीनु, दलित कहानियाँ," "चर्चित दलित कहानियाँ", तथा, "दलित महिला कथाकारों की प्रतिनिधि कहानियाँ, डॉ० एक सिंह द्वारा सम्पादित 'काले हाशिए पर' तथा 'यातना की परछाईयाँ' रमणिका गुप्ता द्वारा संपादित 'दूसरी दुनिया का यथार्थ' तथा 'दलित कहानी संचयन', सूरजपाल चौहान द्वारा सम्पादित हिन्दी के दलित कथाकारों की पहली कहानी तथा डॉ० रजत रानी, मीनू द्वारा सम्पादित 'हाशिये शहर' कहानियों का संग्रह विशेष महत्वपूर्ण है। कथा साहित्य के माध्यम से सच्चे अर्थों में दलितों के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक समस्त अन्याय, शोषण व अपमान के प्रति विरोध का प्रयास किया है। दलित जीवन की बासदी को समाज के समक्ष रखकर उस विद्वेष कटुतापूर्ण जातिगत दुर्भावना से छुटकारा दिलाने का प्रयास किया है जिसने सदियों से दलितों का शोषल किया है, दोहन किया है।

अस्पृश्यता, ऊँचनीय को भावना, असमानता, जाति–भेदभाव, सामाजिक उत्पीड़न, अपमान आदि सभी घटनायें सामाजिक समस्या के अन्तर्गत आती हैं। हिन्दी के कहानीकारो ने इन सभी बिन्दुओं को अपनी कहानियों में कई बार रेखांकित किया है। सर्वप्रथम प्रेमचन्द्र ने जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 10, October 2025

को अपनी कहानियों का निषय बनाया। उन्होंने ही सबसे पहले समाज में दलितों की दुर्दशा पर प्रकाश डाला।

यह बात अलग है कि प्रेमचन्द गैर दलित थे और एक गैर दलित होने के बावजूद उन्होंने अपनी कलम दलितों के लिए चलायी। जिसके लिएअ दलित समाज हमेशा प्रेमचन्द्र का ऋणी रहेगा। लेकिन अब समय परिवर्तित हो गया है। अब दलित अपनी आप बीती स्वयं अभिव्यक्त करने लगा है। दलित पढ़े लिखे वर्ग अम्बेडकर चेतना से प्रभावित और प्रेरित होकर कहानी लेखन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। अब दलित रचनाकार अपनी समुष्याओं को अपनी कहानी के माध्यम से बयाँ कर रहे हैं। इन दलित कहानीकारों में एक सशक्त नाम ओम प्रकाश वाल्मीकि का है। ओम प्रकाश वाल्मीकि स्वयं दलित हैं, उनकी, कहानियों में दलितों के प्रति सहानुभूति नहीं बल्कि स्वावुभूति है। वे स्वयं भुक्तभोगी हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में दलित समाज की प्रत्येक समष्याओ को सूक्ष्मता से प्रदर्शित किया है। उनकी कहानियाँ भारतीय समाज का आइना है।

'सलाम', ओमप्रकाश वाल्मीकि के महत्वपूर्ण कहानियों में से एक है। 'सलाम' दलितों में चली आ रही सलाम की प्रथा को केन्द्र में रखकर लिखी गयी कहानी है। सलाम एक ऐसी प्रथा है, जिसमें विवाह के अवसर, पर नवविवाहित दलित वर–वधू को गैर– दलितों' के दरवाजों पर जाकर सलाम करना पड़ता है । ब्राह्मण खैरात में फटे पुराने कपड़े, एवं एक–दो रुपया, बर्तन आदि देता है। कहानी का पात हरीश पढ़ा–लिखा दलित युवक है। उसके अन्दर चेतना जाग चुकी है। वह एक उपेक्षित दलित नहीं बल्कि एक शिक्षित युवक है। उसे सही गलत की पहचान है इसलिए हरीश इस प्रथा का विरोध करता है। वह इस रूढ़ हो चुकी प्रथा को दलितों का आत्मविश्वास तोड़ने की साजिश मानता है। इसके लिए हरीश अपने विता से भी लड़ता है– "हरीश ने तीखे शब्दों में कहा, " आप चाहे जो समझें,,, मै इस रिवाज को "आप आत्मविश्वास तोड़ने की साजिश मानता हूँ। यह 'सलाम' की रस्म बन्द होनी चाहिए।" इस पर लड़की वालों की ओर से हरीश को समझाने की भरपूर कोशिश की जाती है, कि 'हरीश सलामी के लिए मान जाय।' गांव के बड़े–बड़े अपना अपना तर्क प्रस्तुत करने लगते हैंदृ "बापदृदादो की रीति है, एक दिन में तो न छोड़ी जावे है।" यह खबर गाँव में आगरतरह फैल गयी। वर्तमान में दलित समाज में अपनी जाति छुपाने की प्रवृत्ति दिन–बदिन बढ़ती जा रही है। यह समस्या आज दलित समाज की मुख्य समस्या बन गयी,जो भविष्य में दलित विमर्श और दलित आन्दो लन को महंगी साबित हो सकती है। आज दलित समाज में एक ऐसा वर्ग बन गया है जो अपनी ही जाति को उपेक्षा और हेय दृष्टि से देखता है ।

ओम प्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ, कोई मन– गदंत यूटोपिया नहीं हैं, उनकी कहानियाँ दलित जीवन के ज्वलन्तु दस्तावेज हैं। उनकी कहानियाँ दलित समाज और दलित जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करती है। यहाँ दलितों का भोगा हुआ यथार्थ है उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से भारतीय समाज का वास्तविक चेहरे को उजागर किया है उनकी कहानी भारतीय परंपरा, भारतीय समाज को श्रेष्ठ कहने वालों के मुँह में एक जोरदार तमाचा है। वास्तव में वाल्मीकि जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से सम्पूर्ण मानव–कल्याण की बात करते हैं। इसलिएओम प्रकाश, वाल्मीकि की कहानियों को सही रूप से समझने के लिए साम्प्रदायिक और राजनीतिक चश्मे को उतारना होगा और सेक्युलर दृष्टि से अपनानी होगी, तभी उनकी कठिनाइयों का आप सही रूप से मूल्यांकन कर पायेंगे । इसमें कोई दो राय नहीं है कि उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से ब्राह्मणवाद, सामंतवाद, साम्राज्यवाद, आदि का विरोध किया है इसका अर्थ यह

नहीं है, कि वे भाव दलित की उत्थान की बात करते हैं। वास्तविकता यह है, कि वाल्मीकि जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से विश्व मानव की बात करते है।

संदर्भ सूची–

1. दलिल साहित्य और सामाजिक न्याय –श्री पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी
2. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र– डॉ० शरण कुमार लिंबाले
3. दलित विमर्श साहित्य के आइने में –डॉ जयप्रकाश कर्दम
4. 21वीं सदी का दलित विमर्श, डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव
5. हरिजन, प्रेम कपाड़िया
6. साजिश, सूरज पाल चौहान
7. अपना गाँव, मोहनदास नेमिशराय